एक सौ नब्बे अध्याय

सत्य को स्वर्ग और झूठ को नरक बतलाना तथा सुख और दुःख का निरूपण करना

भृगु कहते हैं—हे तपोधन, सत्य ही ब्रह्म और तप है तथा सत्य ही प्रजा की सृष्टि और प्रजा का पालन करता है। सत्य से ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। झूठ अन्धकार-स्वरूप है। इसी अन्धकार की बदौलत मनुष्यों का अधःपात होता है। मनुष्य इस अन्धकार से ढक जाने पर सत्य-रूप प्रकाश को नहीं देख सकता। सत्य-रूपी प्रकाश स्वर्ग और अन्धकार-रूपी झूठ नरक है। कर्मों के फल से मनुष्य को स्वर्ग और नरक मिलते हैं। सत्य में धर्म, प्रकाश और सुख तथा झूठ में अधर्म, अन्धकार और दुःख रहता है। जो सत्य है वही धर्म है, जो धर्म है वही प्रकाश है और जो प्रकाश है वही सुख है। असत्य ही अधर्म है; जो अधर्म है वही अन्धकार है और जो अन्धकार है वही दुःख है। संसार में शारीरिक और मानसिक दुःख तथा दुःख का परिणाम-स्वरूप सुख मनुष्यों को होता रहता है, यह समझकर बुद्धिमान् लोग कभी मोह में नहीं फँसते। विवेकी मनुष्य को दुःख से बचने के लिए हमेशा यत्न करते रहना चाहिए। सांसारिक और पारलौकिक सुख अनित्य है। जैसे राहुग्रस्त होने पर चन्द्रमा की चाँदनी छिप जाती है वैसे ही अविवेकी मनुष्यों का सुख ढका रहता है। सुख दो प्रकार का है—शारीरिक और मानसिक। सुख के लिए मनुष्य अनेक उपाय करते हैं। सुख से बढ़कर त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) का और कोई फल नहीं है। सुख पाने की इच्छा सभी करते हैं। सुख आत्मा का विशेष गुण है। धर्म और अर्थ ही सुख का मूल है। सुख के लिए ही धर्म और अर्थ का आरम्भ किया जाता है।

भरद्वाज ने कहा—हे तपोधन, आपने जो सुख को श्रेष्ठ कहा है उसका तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आया। देखिए, महर्षि लोग आत्मा के गुण-विशेष सुख की कुछ परवा न करके ध्यान में मन लगाते हैं। सुना जाता है कि ब्रह्माजी ने सुख की इच्छा न करके ब्रह्मचर्य रखकर तप किया था। उमापति ने काम को देखकर जला डाला। इन दृष्टान्तों से जान पड़ता है कि महात्मा लोग सुख की इच्छा नहीं करते थे। इसलिए सुख आत्मा का विशेष गुण नहीं कहा जा सकता। आपने जो कहा है कि सुख से बढ़कर और कुछ नहीं है, इस बात पर मुझे विश्वास नहीं होता। यह भी प्रवाद है कि पुण्य से सुख और पाप से दुःख की उत्पत्ति होती है। १०

भृगु ने कहा—भरद्वाज! झूठ से अज्ञान उत्पन्न होता है और अज्ञान से क्रोध, लोभ और हिंसा का भाव पैदा होता है। झूठ की ही बदौलत मनुष्य धर्म को छोड़कर अधर्म करने लगता है और उसे हमेशा अनेक प्रकार की व्याधि, रोग, चिन्ताएँ, वध, बन्धन, भूख, प्यास, आँधी-पानी, गरमी-सरदी, बन्धुओं का वियोग और धन का नाश आदि दुःख सताते रहते हैं। इसलिए झूठ बोलनेवाले को सुख कैसे मिल सकता है? जिस मनुष्य को इस प्रकार के शारीरिक और मानसिक दुःख नहीं हैं वही सुख का अनुभव कर सकता है। ये सब दुःख स्वर्ग-